P. R. No.: DL(S)-17/3082/2009-11
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473

पूज्य आचार्य शिव मुनिजी तथा पूज्य आचार्य रूपचन्द्रजी का मधुर मिलन जैन आश्रम, नई दिल्ली में।

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी**, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) जैन मंदिर आश्रम, सराय काले खाँ के सामने रिंग रोड़, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–13, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित। संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
जनवरी, 2010

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

सारा पर्यावरण अभय हो,
नया वर्ष शुभ मंगलमय हो।

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 01 **अंक : 01** **जनवरी, 2010**

: मार्गदर्शन :

पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: सम्पादक मंडल :

श्रीमती निर्मला पुगलिया,

: व्यवस्थापक :

श्री अरूण तिवारी

एक प्रति	: 5 रुपये
वार्षिक शुल्क	: 60 रुपये
आजीवन शुल्क	: 1100 रुपये

: प्रकाशक :

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013

फोन नं. : 26315530, 26821348

Website: www.manavmandir.com
E-mail: contact@ manavmandir.com

इस अंक में

01. आर्ष वाणी	-	5
02. बोध कथा	-	5
03. संपादकीय	-	6
04. गुरूदेव की कलम से	-	7
05. विचार मंथन	-	12
06. गीतिका	-	14
07. सत्य-कथा	-	15
08. अध्यात्म	-	16
09. चुटकुला	-	17
10. जिज्ञासा	-	18
11. गजल	-	21
12. स्वास्थ्य	-	22
13. श्रद्धा और विश्वास	-	25
14. समानता का पाठ	-	26
15. सकारात्मक दृष्टिकोण	-	27
16. धर्म-मार्ग	-	28
17. बालें तारे	-	31
18. समाचार दर्शन	-	33

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी,
अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी
स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री धर्मपाल अंजनारानी ओसवाल, लुधियाना
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा
धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास गोयल सुनाम पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन,
न्यू अशोक नगर, दिल्ली
मास्टर श्री बैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार

आर्ष-वाणी

यत्र सर्वोपि नेतारः सर्वे पंडितमानिनः
सर्वेमहत्व मिच्छंति तद्राष्ट्रंविच्छिनाशितं

-नीतिवाक्य

जहां सब अपने को नेता मानते हैं, सब अपने आपको पंडित मानते हैं और जहां सब महात्वाकांक्षी हैं उस राष्ट्र को विनाशोन्मुख जानो ।

बोध-कथा

साहस की जीत

यह घटना उस समय की है, जब नेपोलियन की सेना आल्पस पहाड़ के सामने खड़ी थी नेपोलियन उससे होकर गुजरने के लिए रास्ता ढूढ़ रहा था। एक दिन वह मार्ग खोजते खोजते पहाड़ की तलहटी में चला गया । वहां उसे एक घर नजर आया। वह घर के पास पहुंचा और उसने दरवाजा खटखटाया । एक बुढ़िया बाहर आई । बुढ़िया नेपोलियन को नही पहचानती थी । किन्तु अतिथि जानकर उसने उसकी काफी आव भगत की । नेपोलियन ने बातो ही बातो में बुढ़िया से आल्पस को पार करने का रास्ता जानने की कोशिश की । यह सुनते ही बुढ़िया बोली, मूर्ख तेरे जैसे कितने ही इस दुर्गम पहाड़ पर चढ़ने व मार्ग ढूढ़ने के प्रयास में जान गंवा बैठे है। बैमौत मत मर वापस लौट जा। नेपोलियन मुस्कराते हुए बोला- माता जी आपने पहाड़ के लिए मार्ग में आने वाली कठिनाइयो के बारे में आगाह करके मेरा हौसला और उत्साह बढ़ा दिया है। अब मैं बेहद सर्तकता एवं होशियारी से कार्य करूंगा और एक दिन इस आल्पस पहाड़ को अवश्य पार करके रहूंगा । नेपोलियन की बाते सुनकर बुढ़िया हैरान रह गई । उसने मन ही मन सोचा कि जोखिम की यह चुनौती देने वाला कोई असाधारण व्यक्ति ही हो सकता है। यह सोचकर वह नेपोलियन को आशीर्वाद देते हुए बोली- बेटा हिम्मती एवं साहसी के लिए इस संसार में कोई भी काम असंभव नही है। तुम अपने साहस एवं हिम्मत से अवश्य अपने अभियान में सफलता प्राप्त करोगे । इसके बाद नेपोलियन वहां से चला गया ।

बुढ़िया की बात को ध्यान में रखते हुए नेपोलियन ने अत्यंत सावधानी व हिम्मत के साथ आल्पस पर चढ़ने का मार्ग तलाशना शुरू कर दिया । आखिर अपने साहस और मेहनत के कारण उसने पहाड़ पर चढ़ने की सफलता पा ली ।

सम्पादकीय

रमणीयता और नवीनता का संगम है नववर्ष

भारत वैसे तो बहुत महान देश है। इसकी छटा कला, प्राकृतिक सौदर्य, भव्य निर्माण आदि चीजे देखने में काफी खूबसूरत लगती है। चारो तरफ की हरियाली, खिलते हुए फूलों के साथ पूरे विश्व को नववर्ष की शुभकामनाऐं प्रदान करते है। नई तकनीकें, नई दुनिया नए आविष्कार हमारे जीवन में उमंग उल्लास भर देती है। अचानक हर एक नई खोज नई कोशिश हमारे अन्दर आत्म विश्वास जगा देती है। उसी प्रकार नया वर्ष जो कि हर एक इंसान के लिए बेहद खुशियां लेकर आता है। भारतीय संस्कृति के हिसाब से सोचें तो नया वर्ष चैत्र मास से शुंरू होता है। लेकिन विश्व मान्य नया दिवस 1 जनवरी से शुरू होता है। आज हम पूरे संसार को एक ऐसे ज्वालामुखी के मुख पर खड़ा देख रहे है। जहां सिर्फ एक चिंगारी पूरे विश्व को खाक कर सकती है। यह ग्लोबल वर्मिंग, ग्लेशियरों का पिघलना, समुद्र तल का ऊपर उठना, अनेक तरह के चक्रवात आदि जितनी तरह के प्राकृतिक आपदाओं का भय हमें सता रहा है। वह सब भी है हमारे अपने ही द्वारा किए गए कृत्यों का फल है। आज समाज एक ऐसे रूप में परिणत है, जहां प्रेम भाईचारा सहयोग के स्थान पर घृणा क्रोध छुआछूत, वैमनस्य, आदि व्याप्त हैं। जाति और संप्रदाय का भूत सबको पागल कर रहा है। विश्व स्तर पर एक ऐसी होड़ मची है जिसमें सब एक दूसरे से आगे बढने के लिए सारे नाजायज हथकण्डे अपना कर एक दूसरे को क्रश करने पर लगे है। कहते है सुधार के लिए कुछ लोग ही काफी होते है। बाकी तो भीड़ होती है। जो इशारे पर चलती है। श्रीराम को हनुमान, अंगद, सुग्रीव, जामवंत आदि कुछ ही सहयोगी मिले पर इन्हीं के द्वारा रावण जैसे शक्तिशाली सम्राट को पराजित किया। भगवान श्रीकृष्ण को कुछ अनुयायी पांडवों के रूप में मिले जिसके सहारे उन्होने इतने बड़े प्रतापी कौरवों का अंत कर समाज को नई दिशा दी। गुरू गोविंद सिहं जी ने पांच शिष्यों को चुनकर व्यवस्था का परिवर्तन किया। भगवान महावीर, महात्मा बुद्व, गांधी आदि आपने विचारों आदर्शों के बल पर ही भगवान होने का स्थान प्राप्त कर सके। जिस नववर्ष का हम लोग मनाते आ रहे है। वो ईसा मसीह भी शूली पर हंसते-हंसते अकेले चढ़े। जो उनके बलिदान के रूप में उनको धर्म में भगवान के रूप में मान्यता मिली। वे पूजे जाने लगे और वो अमरत्व को पा गए। अतः हमें भीड़ से नही अपने आप पर विश्वास कर आगे बढ़कर धार्मिक परोपकारी समाज की रचना करनी होगी ताकि हम आने वाली पीढ़ियों को मौका दे जिसमें हर्षपूर्वक गर्व से कर सके कि नर्ववर्ष मंगलमय हो और हमारे भगवान तथा गुरूओं का अशीर्वाद सबको मिले।

○ निर्मला पुगलिया

निः शस्त्रीकरण : महावीर का मन्तव्य

○ गुरुदेव की कलम से

महावीर कहते हैः शस्त्र की परम्परा आगे बढ़ती जाती है वह कभी रूकती नही है। यह संभव नही है कि किसी एक बिन्दु पर उसे यथास्थिति में रखा जा सके । अगर शस्त्र का अस्तित्व है तो उसकी परम्परा अनिवार्यतः होगी और यह अपनी मूल प्रकृति के कारण आगे से आगे बढ़ती ही जाएगी।

मानव जाति इस नग्न सत्य का साक्षी है। प्रागैतिहासिक युग का मानव पत्थरों से लड़ता था । पुरातत्ववेत्ताओं ने पूर्व प्रस्तर एवं प्रस्तर - युगों में व्यवहृत पत्थर के चाकुओं, कुल्हाड़ियों और गदाओं की प्रायः समस्त प्रागैतिहासिक सभ्यताओं में पाया है । कालांतर में तीर कमान बने । हाथी दांत, लकड़ी, गेडे के सींग आदि का प्रयोग महाभारत और उसके समकालीन ग्रन्थों में आया है। ताम्र और लौह युगीन सभ्यताओं के साथ तलवार कृपाण, भाले, बरछियां आदि बने और इनका प्रयोग भारत में तो मुगलों के आने तक चलता रहा । उनके साथ बारूद आई । बाबर ने राणासांगा पर बारूद की ताकत से विजय पाई । बारूद और विस्फोटकों का विकास अधिकतर पश्चिम में हुआ । मुगलो के तोप खानों का संचालन और विकास डचों फ्रासंसीसियों और पुर्तगालियों ने किया । फिर अंग्रेंज आए। प्रथम एवं द्वितीय महायुद्ध में बारूद का व्यापक प्रयोग हुआ । जिस व्यक्ति के नाम पर संसार का सर्वश्रेष्ठ नोबल पुरस्कार दिया जाता है वह डाइनामाइट का आविष्कार था। आज ये सब बहुत पीछे रह गए है। परमाणु शक्ति की खोज तथा उसके शस्त्र रूप में हिरोशिमा तथा नागासाकी पर द्वितीय महायुद्ध के दौरान अमेरिका द्वारा प्रयोग विश्व युद्धों के इतिहास की अभूतपूर्व घटना है। एयर मार्शल टिबेट्स ने जिसने बम गिराए थे, अपने हाथों हुई संहार लीला देखी तो उसका सारा मानसिक संतुलन डगमगा गया । अपराध से पीड़ित उसकी मानवीय सवेंदना अनेक बार मानसिक चिकित्सा से गुजरने के बाद भी उसे जन्म भर पीड़ा देती रही । परमाणु शस्त्रों की अंधी दौड़ में पचास मेगाटन और सौ मेगाटन के विश्व विनाशक शस्त्रों का निर्माण करने के बाद भी संतोष नही पाया । युद्ध विशेषज्ञों का अनुमान है कि आने

वाले चन्द दशकों में जहरीली गैसों तथा रोगाणुओं का प्रयोग भी युद्धों में हो सकता है। भय है जनक शस्त्रों का मानसिक विकृतियों का भी शस्त्र रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इनके प्रयोग द्वारा पूरा संसार पागलो और अपराध कर्मियों से भरा जा सकता है। भावी शस्त्रों की भंयकर संभावनाओं के आतंक से सारा मानव समाज पीड़ित है। विश्व के प्रमुख वैज्ञानिकों और राजनेताओं ने बार-बार निःशस्त्रीकरण की आवाज उठाई है। शस्त्रों को परिसीमित करने के लिए अर्न्तराष्ट्रीय सन्धियां होती रही है। और उनका उलंघन करते हुए सारे देश शस्त्र निर्माण में लगे है। क्योकि किसी को किसी पर विश्वास नही है। सबको एक दूसरें पर भय है। भय से भयानक शस्त्रों का निर्माण होता जा रहा है। और उनसे भय बढ़ता जा रहा है। अनेक बार सारे परिमाणविक शस्त्रों को सूदूर आकाश में ले जाकर नष्ट कर देने के प्रस्ताव विश्व के विकसित राष्ट्रों ने एक दूसरे के आगे रखा है लेकिन उन पर चाहते हुए भी सहमति नही बन पाई । पहल करने को कोई तैयार नही है क्योंकि भय और आशंका उन्हें करने नही दे रही है। जब तक शस्त्रों का समूल उन्मूलन नही जाता है, मानव जाति को भय से मुक्ति नही मिलेगा लेकिन इसमें बाधक भी मानव का पारस्परिक भय ही है। शस्त्रों का उत्पादन और प्रयोग के परिशीमन प्रयास सफल नही हो सकते है । क्योंकि शस्त्रों से अभिन्न रूप से जुड़ी है। उनकी परम्परा जो रूक नही सकती । महावीर ने यह बात पचीस सौ वंर्ष पूर्व कही थी और आज संसार के वर्तमान दशा इस जीवनन्त सत्य की साक्षी है।

<u>भय और हिंसा का अभिन्न सम्बन्ध</u>

महावीर ने कहा कि हिंसा से भय तथा भय से हिंसा या एक निरतंर गतिमान अधोगामी चक्र है जिसका कोई अंत नही है। जब तक भय है हिंसा होगी जब तक हिसा हे भय होगा अतीत के भय की स्मृति वर्तमान के भय की चेतना तथा भविष्य के भय की आंशंका हिसा में अनिवार्यता परिणत होती है।

अप्पेगे हिंसिसु में ति वहंति
अप्पेगे हिसंति में ति वहंति
अप्पेगे हिसिस्संति में ति वहंति

- इसने मुझे मारा है यह मुझे मार रहा है, यह मुझें मारेगा - यह सोचकर वे एक दूसरे को मारते है । यह एक अन्तहीन क्रम है । आज सारा विश्व इसकी चपेट में है। इसे रोका नही जा सकता ।

परस्पर क्रिया प्रतिक्रिया के दुर्निचार नियमों से बंधा हुआ यह कर्म अप्रतिहत और अपरिहार्य है । इस द्वैत में निःशस्त्रीकरण संभव नही और सीमित शस्त्रीकरण का कोई अर्थ नही रखता । शस्त्र शब्द का प्रयोग महाबीर ने विशेष अर्थो में किया है। आदमी शस्त्र बाद में बनाता है पहले वह शस्त्र बनता है वह जो बनाता है वह साधन मात्र है उपादान नही है। साधन कोई भी हो सकता है मन्दिर का घंटा पूजा करने के समय बजाने के काम आता है। संगीतमय ध्वनि मुखरित करने में बाद्य यन्त्र के रूप में उपयुक्त होता है। लेकिन कोई पागल पुजारी क्रोध में अन्धा होकर उससे किसी का सिर भी फोड़ सकता है। वह अपने आप में शस्त्र नही है। शस्त्र बना लिया जाता है। यह बाद की घटना है उससे पहले कि पुजारी मंन्दिर के घटें को शस्त्र बनाता, वह स्वयं शस्त्र बना है। या बन चुका है। आक्रमणता का भाव उदित होते ही व्यक्ति स्वयं शस्त्र बन जाता है। फिर एक से एक बढ़कर हिंसा के साधन खोज निकालता हैं । वह साधन आदमी मानव की पत्थर की कुल्हाड़ी भी हो सकती है। और आज का गाइडेड मिसाइल भी। दोनों से परिणमित ध्वंस के आयामों में आकाश पाताल का अन्तर हो सकता है लेकिन यह अन्तर बाह्म कारणों के सापेक्ष है भीतर का आदमी शस्त्र बन चुका है।

<u>भीतर से बनना है अशस्त्र</u>

इसलिए महावीर केवल यही नही कहते कि शस्त्र मत बनाओं या जो बने हुए है उन्हें विसर्जित कर दो। उससे कुछ होने वाला नही है। एक बार सारे शस्त्र शून्य अन्तरिक्ष में विसर्जित कर देने पर भी यदि आदमी भीतर से अशस्त्र नही बना तो नए सिरे से और भी अधिक विनाशक शस्त्रों का निर्माण कर डालेगा । अगर वह भीतर से वह बन चुका है अशस्त्र, तो शस्त्रों का होना या न होना उसके लिए कोई मायने नही रखता । शस्त्र हमारा मन है। मन से वाणी और कर्म तक शस्त्रों की परम्परा बढ़ती रहती है । उसके आयाम फैलते रहते है। इन आयामों को सीमाबद्व नही किया जा सकता है। इनका समूल उनमूलन ही संभव है और वह तभी जब कि भीतर शस्त्र की सत्ता ही न रही हो।

निःशस्त्रीकरण एक अन्तर्राट्रीय प्रश्न है। महावीर मानते है कि समस्या पारिवारिक हो या सामाजिक, राष्ट्रीय हो या अन्तर्राष्ट्रीय, उसका उदगम व्यक्ति के भीतर ही है। वहां से उसकी परिव्याप्ति सर्वत्र होती है।

व्यक्ति का जीवन उसके मन की प्रतिच्छाया है। मन है बाहर के पर्यावरण से मानसिक

चेतना की क्रिया -प्रतिक्रिया का अनवरत क्रम । यह संवादी (हार्मोनियस) हो सकता है, विसंवादी (डिस-हार्मोनियस) भी हो सकता है। यह सग्रहात्मक हो सकता है, विग्रहात्मक भी हो सकता है। यह एकात्मक हो सकता है, विभेदात्मक भी हो सकता है। यह शस्त्र है यही अशस्त्र है। जहां यह अपना पर्यावरण पर आक्रमण हो जाता है वह शस्त्र बन जाता है। जहां आक्रमण नही होता, अशस्त्र बन जाता है। आक्रामकता को मनोवैज्ञानिक मानव की मूल वृत्ति मानते है। डार्विन अपने विकासवाद के सिद्वान्त की आधारशिला संघर्ष और आक्रामकता पर रखते है। अस्तित्व के लिए संघर्ष तथा श्रेष्ठ का कायम रहना, सबसे शक्ति शाली का बचा रहना, दुर्बलों का मिट जाना यह विकास की प्रक्रिया का अनिवार्य फलित है। प्रकृति का अनुल्लंघनीय नियम है। डार्विन और उनके मतानुयायियों की दृष्टि में अपने अस्तित्व को बचाने के लिए, उसकी सत्ता का निरन्तर विस्तार करने के लिए अनवरत संघर्ष को ही अधिकारी माना है, डार्विन ने विकास के समस्त श्रेय का।

<u>संघर्ष है स्वभाव को पाने का</u>

डार्विन की प्रपत्ति (कान्सेप्ट) सत्य है, लेकिन खण्डित सत्य है । चेतना अनन्त पराक्रम मयी है। इसे महावीर, बुद्व, कृष्ण, क्राइस्ट, सभी मानते है। जड़ द्रव्य की कारा से विमुक्ति के लिए यह सतत संघर्षरत है। यह सभी स्वीकार करते है। अलेक्जेन्डर ने अपने प्रख्यात ग्रन्थ स्पेस, टाइम एण्ड डीटी यही प्रतिपादित किया है। दिनकाल के चौखटे (स्पेस टाइम) कन्टीन्यूअस में आबद्व अनन्त रूपों में आत्मा अपनी निर्मल -निर्मुक्त चेतन्य सत्ता की प्राप्ति के लिए, जो उसका मूल स्वभाव है, सतत संघर्ष कर रही है। जड़ द्रव्य के आवरणों का निरन्तर विरल होते जाना ही चेतना के प्रकाश का प्रखरतर होना है। यह निरन्तर परिवर्द्वमान अन्तःप्रकाशन ही विकास है -इवोल्युशन है। नितान्त अव्यक्त स्थिति से लेकर स्वयं-सम्बन्द्व परमात्म सत्ता तक, चेतना के सतत संघर्ष की अगणित स्थितियां मिलती है। इसमें शक्ति का निरन्तर ऊर्ध्वगमन होता रहता है। जहां एक अपेक्षित बिन्दु से कम है, पराभूत होकर मिट जाता है। और पुनः उससे अधिक शक्तिमत्ता के साथ प्रस्फुटित होता है।

लेकिन यह संघर्ष जड़ता से, उसकी सीमाओं से, प्रकृति के अवरोधों से है चाहे वे प्रकृति की जड़ द्रव्यमयी सत्ता में मूर्तिमान हों अथवा जीवों के भीतर की मानसिक जड़ता में। प्राणियों का प्रकृति से वातावरण से अन्य जीवों से, भी जो वातावरण के अंग है संघर्ष

चलता रहता है जिसमें दुर्बल की पराजय और विनाश तथा शक्तिशाली की विजय और अस्तित्व सत्ता अन्तर्भूत हैं। लेकिन यह प्राणियों के विविध वर्गो में होता है- प्रजातियों में। अपनी ही प्रजाति के प्राणी का विनाश कर कोई प्राणी आगे नही बढ़ पाता । जीव शास्त्रियों के अनुसार आदमी और चूहा दो ही प्राणी है जो अपनी ही प्रजाति के प्राणियों को संहार करते है। शेष सारे जीव जगत् में ऐसा कही देखने को नही मिलता एक शेर दूसरे शेर को एवं एक सांप दूसरे सांप को नही मारता । उनमें समूह चेतना तो नही है। लेकिन मूल प्रवृत्ति (इंस्टिक्ट) उन्हें पैदा करने में उसे रोकती है। मानव एक सामाजिक प्राणी है। उसमें समूह चेतना है। विकास का संघर्षमयी क्रिया से गुजरकर निरन्तर आगे बढ़ने का कारण यही सामाजिकता है। विकास का श्रेय परस्पर सहयोग को है। सहयोग की सामूहिक शक्ति से ही वह प्रकृति के अवरोधों से लड़कर उन्हें जीतता आया है। ज्ञान-विज्ञान और सभ्यता के विकास का सारा श्रेय इसी सामाजिकता को है। सामाजिकता का मूल सूत्र है सहयोग, विग्रह नही डिस हार्मोनी नही । मानव अपने लिए शस्त्र न बने -परिवार, समाज, राष्ट्र और सारे स्तरों पर- यही निःशस्त्रीकरण है, अहिंसा है।

<u>अभय ही सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण</u>

निःशस्त्रीकरण, अर्थात मै किसी के लिए शस्त्र नही बनूं, किसी के साथ संघर्षमय, आक्रामक और विसंवादी नही बनूं- यह लोक जीवन की एक नैतिक अपेक्षा है। उसकी मूल प्रेरणा सामाजिक चेतना है, प्रेम और सहयोग की भावना है। लेकिन आज निःशस्त्रीकरण का मूल प्रेरणा अपने विनाश की आशंका है, भय है, अतः वह शस्त्रों का निर्माण और उपयोग परिसीमित करने तक ही सीमित रह गया है। इस रूप में वह सार्थक एवं सफल नही सकता । क्योंकि भय का मूल हिंसा है, वैर वृत्ति है और वह भय से पोषित होकर निरन्तर बढ़ती ही जाती है। उसके सानान्तर ही बढ़ती रहती है शस्त्रों की परम्परा भय से तनावयुक्त संतुलन को कुछ समय के लिए बलात् कायम रखने का प्रयास किया जाता है जो अन्ततः असफल होता है क्योंकि तनाव एक सीमा पार कर मरणेच्छा तक में बदल जाता है। और उसका बांध टूटने पर अप्रत्याशित विनाश होता है। जब तक हम वैर वृत्ति से आक्रान्त नही हैं, भय होगा । भय पीड़ित हैं, जब तक शास्त्रों की परम्परा सीमित और उन्मूलित नही होगी । जब तक हम अपने आप में शस्त्र है, तब तक शस्त्रों सें की अन्धी दौड़ रूक नही सकती । जब हम स्वयं में अशस्त्र हो जाते है तो निःशस्त्रीकरण स्वतः हो चुकता है- चाहे शस्त्रों का अस्तित्व रहे या न रहे।

अभिशप्त जीवन

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

शिखर की आकस्मिक मौत ने सारे परिवार को हिला दिया। सेठ जमना प्रसाद ने पहले लड़के की शादी की। पन्द्रह रोज बाद ही अचानक कार एक्सीडेंट में शिखर ने सदा के लिए आंखे मूंद ली। स्वाति अपने मां-बाप की इकलौती लड़की थी। बीस लाख का दहेज लेकर आई थी। दुनिया का सुख कितना कुटिल और क्षणिक है, इसका उसको अहसास भी नही हो पाया कि दुःख का पहाड़ टूट पड़ा। स्वाति के माता पिता ने कहा कि लड़की को हमारे घर भेज दो, हम फिर से उसकी शादी कर देंगे। इस पर ससुराल वालों ने कहा - नहीं जी हमारे यहां पुनर्विवाह का रिवाज नहीं हैं लड़की की फिर से शादी नहीं होगी। लड़की के पिता सेठ मायाराम इस सदमे को बर्दाश्त नहीं कर पाए और बारह दिनों के भीतर सेठ मायाराम ने अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। इधर विधवा बेटी और विधवा मां। दोनों का सहारा लुट गया। कौन किसको आश्वस्त करे। बेटी सोच रही थी कि चलो पिता जी के कोई लड़का नहीं है मैं लड़के की कमी को पूरा कर दूंगी। पिताजी के व्यापार को संभालूंगी जिससे मेरा भी मन बहल जाएगा, लेकिन अब तो चारों तरफ और घना अंधेरा छा गया। इधर बाप का घर उजड़ गया। उधर स्वाति का तो घर बसा ही नहीं था।

स्वाति के पीहर और ससुराल के सभी रिश्तेदारों ने उसके ससुर को समझाया कि सेठ आप इस नाजुक कली का जीवन बर्वाद मत करो। आप अपने छोटे लड़के के साथ इसका विवाह कर दो या फिर इसको इसके पीहर भेज दो। पीहर वाले जहां भी उचित समझें उसका विवाह कर देंगे। आप रोड़ा मत बनो। सेठ जमना प्रसाद किसी भी रिश्तेदार के सुझाव से सहमत नहीं हुए। उन्होंने इस अधखिली कली को तिल-तिल जलने के लिए विवश कर दिया।

इधर स्वाति पर दो-दो जिम्मेदारियां आ गई थी। अपनी जवानी को संभाले रखना और बिलखती मां का मन बहलाना। वह कभी अपनी मां के पास जाती और कभी अपने ससुराल आ जाती। मां के लिए अब स्वाति के सिवाय इस दुनियां में अंधेरा ही अंधेरा

है। जब वह स्वाति को देख लेती है तब उसको चैन मिलता, जिस दिन स्वाति अपनी मां से नहीं मिलती, मां बिलख-बिलख कर रो पड़ती। मां की दयनीय हालत देखकर स्वाति ने निर्णय लिया एक बार जैसे भी हो अपनी मां से रोजाना मिलूंगी।

लेकिन जमना प्रसाद ने स्वाति पर प्रतिबन्ध लगा दिया कि पन्द्रह दिन से पहले यह मां से मिलने नही जाएगी। सेठ जमना प्रसाद ने अपने शेष तीनों लड़कों की और एक लड़की की भी शादी कर दी। लड़की अपने ससुराल चली गई। तीनों लड़के अपनी नवोढाओं के साथ रंगोलियों में विलम गए।

बेचारी स्वाति ही एक ऐसी अभागी थी जिससे न कोई बतियाने वाला था और न कोई उसका सुख दुःख पूछने वाला। किसी वस्तु की जरूरत हो तो भी न कोई सुनने वाला और न लाने वाला ही कोई हीरे जवाहरातों से खेलने वाली स्वाति ने दुर्भाग्य के साथ समझौता करना ही उचित समझा। उसने किसी से कोई शिकायत नहीं की। जब पन्द्रह दिनों बाद अपनी मां के पास जाती तो अपनी आवश्यकताओं की सारी चीजें ले आती और पन्द्रह दिन किसी भी तरह गुजारती अचानक स्वाति के सिर से मां का साया भी उठ गया। माता-पिता की करोड़ों की सम्पत्ति का एक मात्र अधिकारी स्वाति ही बनी, लेकिन स्वाति के हाथ में कुछ नहीं आया सारे धन वैभव पर सेठ जमना प्रसाद ने नियन्त्रण कर लिया। स्वाति तो एक-एक पैसे के लिए मोहताज हो गई। स्वाति के माता-पिता की सम्पत्ति पर सारा परिवार गुलछर्रे उड़ा रहा है और वह बूंद-बूंद के लिए तरस रही है।

अच्छे खानदान की लड़की झगड़ा करना पसंद नहीं करती और घुट-घुट कर जिए तो क्या जिए? किसी के भी दिल में रहम नहीं। सास देवरानियां, ननद किसी को भी स्वाति की पीड़ा का अहसास नही। स्वाति किसी पड़ोसन से भी बोल ले तो सबकी शक भरी निगाहें उसकी तरफ घूम जाती है। जिस स्वाति की एक निगाह उठते ही सैकड़ों हाथ जुड़ जाते थे, आज उस स्वाति की तरफ नजर उठाने वाला भी कोई नहीं रहा।

स्वाति मन ही मन सोचती है मैं किसके लिए जी रही हूं? क्या ऐसे अभिशप्त जीवन से मौत बेहतर नहीं? भावावेश में आदमी क्या नहीं कर लेता? जिस स्वाति ने बीस वर्ष तक उपेक्षा, घुटन, और यातना भरा जीवन जी लिया वही आज जीवन से ऊब कर आत्म हत्या का घिनौना रास्ता अपना रही है।

गर्मियों के दिन ! मध्यान्ह् का समय सारा परिवार आराम से सोया हुआ था कि स्वाति सहमे कदमों से अपने कमरे में गई, चुन्नी से गले को कसकर बांध लिया और पंखे से लटक गई। स्वाति के शरीर के अन्त के साथ उसके इतिहास का भी अन्त हो गया।

गीतिका

-मुनि रूपचन्द्र

गुरू का ले लो आशीर्वाद,
अलख निरंजन से होता है, गुरू का ही संवाद ।।

गुरू ब्रहमा, गुरू विष्णु, महेश्वर
परम ब्रहम गुरू है परमेश्वर
है सपूत प्यारे वे प्रभु के, वे ही अनहदनाद । (1)

कल्पवृक्ष सम है गुरू का मुख
दर्शन से मिलता सुख ही सुख
जो भी चाहो पाओ उनसे लेकर शरण अबाध। (2)

गुरू की गरिमा सब मत गाते
शास्त्रों का वे सार बताते
अज्ञानी जन कैसे जाने, गुरू का ज्ञान अगाध । (3)

शिष्यों को निर्बन्ध करे जो
जनम मरण संताप हरे जो
गुरू का काम न "रूप" कभी भी, करना वाद-विवाद । (4)

साधु वेश में लुटेरा

○ साध्वी श्री मंजुश्री

उत्तर प्रदेश विजनौर जिले के गांव की एक घटना है गांव में एक सेठ रहता था। सेठ को संतान के अलावा और सभी सुख प्राप्त थे। लेकिन संतान के बिना सभी सुख व्यर्थ लगते थे। सेठ ने संतान प्राप्ति के लिए दवा-दारू टोना टोटका, झाड़-फूंक सभी कुछ करवाया लेकिन कोई लाभ नही हुआ ।

सेठ पूरे गांव के लोगो के सुख-दुख में काम आता था। अतः सभी गांववासी सेठ के दुख को अपना दुख समझते थे। यदा कदा वे सेठ से उसके संतान न होने की चर्चा भी कर लेते थे। सेठ के दुख की चर्चा एक ठग के कानो में पड़ गई ं उस ठग ने साधु का वेश बनाया और सेठ के घर पहुंच गया । सेठ सेठानी ने साधु का स्वागत किया साधु ने सेठ सेठानी के मलिन मुख को देखकर कहा सेठ जी आपके दुख को मै अपनी दिव्य दृष्टि से देख चुका हूं। मै आपको संतान प्राप्त करने का आशीर्वाद देता हूं। लेकिन पहले हमे अनुष्ठान करना होगा । आपके घर में कुछ प्रेतात्माओं का वास है। मै उन सबको घड़े में बन्द करके उसे जंगल में दफना दूगा । लेकिन इस सारे कार्य में हमें चार पांच घटे लगगे। जब तक मैं यह अनुष्ठान करूं तब तक आप पूरा परिवार घर के बारह बैठ जाए और मुझे एक बड़ा सा घड़ा दे दे। सेठ को साधु की बात पर विश्वास हो गया। उसने साधु को घड़ा दे दिया और स्वयं सारे परिवार को लेकर घर के बाहर बैठ गया

साधु वेश धारी ठग ने घर के अन्दर जाकर सोना-चांदी हीरे पन्ने, मोति मणिक नगद पैसा जो था सारा घड़े मे भर लिया । बीच-बीच मे जोर जोर से चिल्लाता भी रहा ठहरो। अब मैं तुम्हे नही छोडूंगा । तुम्हे दफना कर ही दम लूंगा । फिर अपनी आवाज को बदल कर कहता हमे छोड़ दो । हम अपने आप चले जाएगे। आदि नाटक रचता रहा ।

उसने सारा धन बटोर कर उसी घड़े में भर लिया और घड़े को खूब मजबूती से बंद कर लिया । तत्पश्चात घड़ा लेकर बाहर निकला और बोला सेठ जी मैने दुष्ट आत्माओं आपकी समस्या इस घड़े में बन्द कर दी है। अब आपको बहुत जल्दी पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी । एक बात ध्यान रखे जब तक इस घड़े को जंगल में दबाकर वापस न आ जांऊ आप घर के अन्दर न जाएं मैं आपकी साइकिल पर रखकर यह घड़ा ले जाता हूं।

सेठ सहर्ष साइकिल उस ढोगी को दे दी। साइकिल पर घड़ा रखकर वह वहां से नौ दो ग्यारह हो गया । सुबह से शाम हो गई । पर साधु नही लौटा । जब अंधेरा होने लगा तो सेठ कुछ जनो को लेकर घर में घुसा । घर की सारी स्थिति देखकर वह घबरा गया। सारा सामान बिखरा पड़ा था । जेवर - नगद आदि सभी कीमती सामान गायब था। अब सेठ के पास रोने पछताने के अलावा बचा ही क्या था । सेठ को अपनी मूर्खता पर बहुत दुःख हुआ लेकिन दुःख करने से क्या हों ।

बुद्ध मार्ग-दाता थे, मोक्ष दाता नहीं

भगवान बुद्ध ने कभी यह दावा नहीं किया कि वे 'मुक्ति दाता' या मोक्ष दाता है उन्होने 'मोक्ष दाता' को मार्ग दाता से हमेशा भिन्न रखा । बुद्ध कहते थे कि केवल मार्ग बताने वाले हैं अपने मोक्ष के लिए प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं ही प्रयास करना होगा ।

एक बार एक ब्राहमण के प्रश्न का उत्तर देते हुए बुद्ध ने कहा एक आदमी तुमसे राजगृह जाने का रास्ता पूछता है, तुम उसे ठीक मार्ग बता देते हो, लेकिन वह उसे छोड़कर गलत मार्ग पर चल देता है। पूरब के बदले पश्चिम की ओर चला जाता है। तो वह राजगृह नही पहुंच पाएगा। लेकिन एक दूसरा आदमी आता है वह भी राजगृह का रास्ता पूछता है उसे भी तुम वही रास्ता बताते हो, वह तुम्हारे बताए मार्ग पर चलकर राजगृह पहुंच जाता है। तो इन दो परिणामों के बारे में तुम क्या करोगे? ब्राहमण ने उत्तर दिया मैं क्या करूंगा, मेरा तो काम मार्ग बताना है।

यह सुनकर बुद्ध बोले- हे ब्राहमण मै भी क्या करूं मेरा काम भी केवल रास्ता बता देना है। कुछ धर्म इलाहमी धर्म (ईश्वरीय धर्म) माने जाते है। लेकिन बुद्ध का धर्म इलाही धर्म नही है। किसी भी धर्म को इलहामी धर्म इसलिए कहते है कि वह ईश्वर का संदेश या अल्लाह का पैगाम या खुदा का हुक्म समझा जाता हैं । ताकि लोग अपने रचयिता की पूजा व इबादत करके अपनी आत्मा की मुक्ति व रूह के लिए जन्नत की प्रार्थना कर सके । अक्सर ईश्वर का पैगाम किसी चुने हुए व्यक्ति द्वारा प्राप्त होता है। इसलिए वह पैगम्बर कहलाता है। वह पैगाम लोगो तक पहुंचाता है। पैगम्बर का काम होता है कि जो उनके धर्म पर ईमान लाते है उनके लिए वे जन्नत का लाभ सुनिश्चित करे। बुद्ध ने कभी अपने श्रीकृष्ण की तरह अवतार, मोहम्मद की तरह अल्लाह की तरह पैगम्बर वह मसीह की तरह खुदा का बेटा होने का दावा नही किया । यदि ऐसा किसी ने समझा तो बुद्ध ने उसका खण्डन किया । बुद्ध ने हमेशा स्वयं को अन्य मनुष्यों की तरह प्रकृति - पुत्र कहा । बुद्ध का धर्म एक खोज है क्योकि यह मनुष्य-जीवन और उसकी स्वाभाविक प्रवृत्तियो के गंभीर अध्ययन का परिणाम है।

एक बार बुद्ध ब्राहमणों के एक गांव में गए । वहां ब्राहमणों ने भिन्न-भिन्न श्रमणों के मतों के सच झूठ के बारे में संदेह प्रकट किया । बुद्ध ने उसकी शंका का उत्तर देते हुए कहा कि हे ब्राह्मणों आपका संदेह ठीक है। संदेह के स्थान में ही तुम्हे संदेह उत्पन्न हुआ है। न तुम श्रुत (सुने वचनों वेदों) के कारण किसी बात को मानो न तर्क के कारण

से, न वक्ता के आकार के विचार से, न अपने चिर विचरित मन अनुकूल होने से, न वक्ता भव्य होने से, श्रवण हमारा गुरू है ऐसा जान कर। जब तुम खुद ही जानो कि ये धर्म (काम या बात) अच्छा अदोष और विज्ञों से आनंदित है, यह लेने ग्रहण करने पर हित सुख के लिए है, तो तुम इसे स्वीकार करो। बुद्व ने कभी भी अपने अनुयायियों को मोक्ष व निर्वाण देने का वायदा या लालच नही दिया । हां यह अवश्य कहा कि जो उनके बताए मार्ग पर चलेगा उसे निर्वाण की प्राप्ति अवश्य होगी । बुद्व ने अपने मार्ग को मध्यम मार्ग बताया और कहा भिक्षुओं ! इन दो अतियों (चरम पंथों) का सेवन नही करना चाहिए (1) काम सुख में लिप्त होना (2) शरीर को पीढ़ा देना इन दोनो अतियों को छोड़.. ने मध्यम मार्ग खोज निकाला है। जो आंख देने वाला ज्ञान कराने वाला शांति देने वाला वह अष्टांगिक (आठ अंगो वाला) मार्ग है। जैसे कि ठीक दृष्टि संकल्प ठीक वचन ठीक जीविका, ठीक व्यायाम (अभ्यास) ठीक स्मृति व ठीक समाधि । आज 21 वीं सदी के वैज्ञानिक युग में अनेक बनावटी भगवान अवतार व साधु संत ऐसे है। जिन्होने लाखों अंध अनुयायियों को मोक्ष व स्वर्ग का झांसा देकर करोड़ों रूपये की चल अचल सम्पत्ति बना ली है।

-प्रस्तुति : अरूण तिवारी

चुटकुला

एक बार पंडित जवाहरलाल नेहरू एक पागलखाना देखने गए। उस समय एक मरीज स्वस्थ होकर अपने घर पर जा रहा था पंडित जी ने उससे पूछा- आपको क्या बीमारी थी? उसने कहा- मैं अपने को हर समय भारत का प्रधानमंत्री नेहरू समझता था। फिर उसने पंडित जी से पूछा- आप कौन हैं।

उन्होंने कहा- मैं ही भारत का प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू हूं।

वह व्यक्ति जोर से हंसा और बोला आप सही जगह आ गए हैं। जैसे मैं ठीक हुआ हूं, थोड़े दिनों में यहां के ईलाज से आप भी ठीक हो जाएंगे।

भविष्यवाणी

○ गोपाल राजू

आज भारत के साथ-साथ पूरे विश्व भर में भविष्य का लेकर जिज्ञासा भरी हुई है। आए दिन पत्र -पत्रिकाओं में निकलने वाले भविष्यफल पाठकों के लिए सर्वप्रथम पठनीय और सर्वाधिंक जिज्ञासापूर्ण विषय होते है। एक सर्वेक्षण के अनुसार विश्व का 75 प्रतिशत से भी अधिक भाग प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से भविष्यवाणी में इच्छुक रहता है। वर्षो मेरा जीवन कट्टरपंथी आर्य समाजियों के मध्य बीता है। उनमें भी मैने इस विषय के प्रति जिज्ञासा देखी है। सैकड़ों ऐसे लोगो की मैने जन्मपत्रियां बनायी है अथवा रत्न और पूजादि प्रयासों से उन्हें लाभ भी पहुंचाया है। आज अनेक कट्टर आर्य समाजी मेरा अनुसरण कर रहे है। दो-चार को छोंड़कर लगभग सब लोग यह मानने को विवश हुए हैं कि विषय में कुछ विलक्षणता है अवश्य । इनमें से दो-चार न मानने वाले लोग है वह केवल इसी बात तक अडिग है कि छः शास्त्रों में से एक ज्योतिष शास्त्र भी है। और उसका अर्थ है ग्रह नक्षत्रों की आकाशीय स्थिति । वह यह नही मानते कि मानव जीवन अथवा अन्य जीव ग्रह नक्षत्रों से प्रभावित होते है। वह ज्योतिष को पूर्णतया अंधविश्वास बताते है।

भविष्य जानने के अनेक तरीके हे जैसे सामुद्रिक विज्ञान अंक विज्ञान ज्योतिष विज्ञान आदि । सामुद्रिक शास्त्र में चेहरा देखकर शरीर में उपिस्थत तिलों से हाथ और पैर की रेखाओं से शरीर के विभिन्न अंगों आदि से भविष्यवाणी की जाती है। सामुद्रिक शास्त्र में सर्वाधिक लोकप्रिय और वैज्ञानिक हस्तरेखा विज्ञान है।

हमारा मस्तिष्क शरीर के विभिन्न अंगो का संचालन करता है। यह बात सिद्व की जा चुकी है कि शरीर में किसी अवयव का संचालन मस्तिष्क का कौन सा भाग करता है। यदि मस्तिष्क का वह भाग किन्ही कारणों से कार्य करना बंद कर दे तो उससे सम्बधित भाग भी कार्य करना बंद कर देता है। मस्तिष्क के विभिन्न भागो का सम्बन्ध व्यक्ति की आंकाक्षाओं काम- प्रवृत्तियों, इच्छाओं आदि पर भी होता है। इसी कारण से शरीर लक्षण विशेष रूप से हस्त रेखाओं द्वारा व्यक्ति की मानसिक क्रियाओं का भी पता चलता है। सामुद्रिक शास्त्र का सम्बन्ध नक्षत्र, पृथ्वी, तथा उसके निवासियों पर उनके प्रभाव तथा उनकी दूर स्थिति आभा से निकलने वाली चुम्बकीय द्रव धारा से है। हमारा स्नायु तंत्र मस्तिष्क तथा हथेली के मध्य एक कड़ी का कार्य करता है। औरवह दोनो सूक्ष्तम संवेदनाओं का भण्डारागार है। चिकित्सा विज्ञान मानता है। कि गर्भावस्था से ही बच्चा मुटठी बंद किए रहता

हैं, इसलिए हथेली की त्वचा सिकुड़ने से उसमें रेखाऐं बन जाती है। यह स्वाभाविक है और प्राकृतिक भी परन्तु यह धारणा मिथ्या है। यदि ऐसा होता तो रेखाओं का क्रम व्यवस्थित नही होता ।

नाखून, त्वचा का रंग नाखून में उपस्थित चन्द्र स्थिति आदि का अध्ययन कर रोग बताने का उपक्रम करते आपने वरिष्ठ चिकित्सकों तक को देखा होगा । विषय वस्तु को अधिक न बढ़ाते हुए यही कहूंगा कि वक्तव्यों की सत्यता की परख स्वयं करके देखिए। दस अनपढ़ व्यक्तियेां के हाथ के छापें लीजिए और दस बौद्विक पढ़े-लिखे के। दस बीमारों के अध्ययन करिए और दस स्वस्थ लोगो का । दस काल्पनिक और हीन भावना से पीड़ित लोगो के छापे देखियें और दस व्यवहारिक और मस्त लोगो के । इसी प्रकार दस-दस के समूह बनाकर विभिन्न प्रकार हस्त रेखाओं के छापे जमा करके अध्ययन करिए और स्वयं निष्कर्ष निकालिए । आप उनमें स्वयं ही अंतर पाने लगेगें। आप मुझे अपने हाथ की छाप दे दीजिए, मैं आपका व्यक्तित्व बता दूंगा ।

भविष्यवाणी की दूसरी विधि है अंकविज्ञान । आपने यह अवश्य अनुभव किया होगा अथवा किसी अन्य के लिए पढ़ा-सुना होगा कि उसका जीवन किसी प्रकार से एक अंक विशेष के चारो ओर घूमता है।

भविष्यवाणी का सर्वाधिक विश्वसनीय विज्ञान ज्योतिष है। विज्ञान भी मानने लगा है। कि ग्रह,नक्षत्र जन जीवन पर प्रभाव डालते है । ज्योतिष का मूल है यद् ब्रहांडे तत्पिंडे अर्थात जिन तत्वों से ब्रहाण्ड का निर्माण हुआ है, उन्ही तत्वों से ब्रहाण्डगत सभी पिण्डों का सृजन हुआ है। इसलिए वराहमिहिर ने लिखा है कि प्राणियों एवं जीव-जन्तुओं के अलावा पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु पर ग्रह नक्षत्रों का प्रभाव पड़ता है। कुमुदनी चन्द्रकिरणों से खिलती है तो सूर्यमुखी सूर्य से । पृथ्वी पर अन्य खगोलीय पिण्डों की तुलना में सूर्य और चन्द्रमा के गुरूत्वाकर्षण बलों के फलस्वरूप समुद्र का पानी ऊपर उठता है। ज्वार-भाटे उत्पन्न होते है । चन्द्रमा और सूर्य के सम्मिलित प्रभावों के फलस्वरूप ही पूर्णिमा और अमावस्या के दिन ज्वार अन्य दिनों की तुलना में अधिक ऊंचा होता है। यही स्थिति शुक्ल और कृष्ण पक्ष की सप्तमी और अष्टमी के दिन सबसे कम होतें हैं। दूसरे शब्दों में कहे कि चन्द्रमा की कलाओं के साथ ही ज्वार घटता या बढ़ता रहता है। मानसिक रूप से विक्षिप्त लोगो के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि पूर्णिमा के दिन ऐसे लोगो की स्थिति विकराल रूप ले लेती है।

सैकड़ों वर्षो के शोध के बाद यह निष्कर्ष निकाला गया कि सूरज पर प्रत्येक ग्यारह वर्ष में आणविक विष्फोट होता है। इसके प्रभाव का व्यक्ति, देश, वनस्पति आदि पर स्पष्ट अध्ययन किया गया ।

स्विस चिकित्सक पैरासिलिसस ने अपने अनुसंधानों से यह सिद्व किया कि कोई व्यक्ति जब ही बीमार होता है जब उसे और जन्म नक्षत्र के साथ जुड़े हुए ग्रह - नक्षत्रों के बीच तारतम्य टूट जाता है। पाइथागोरस ने यह सिद्व किया था कि प्रत्येक ग्रह नक्षत्र अपने निश्चित परिपथ पर चलते हुए एक ध्वनि पैदा करता है। इन सब ग्रह नक्षत्रों की ध्वनि में एक ताल मेल है, एक संगीतबद्वता है। प्रत्येक व्यक्ति की इसी प्रकार की संगीतबद्वता और नक्षत्रों की संगीतबद्वता में भी एक ही व्यवस्था है। जब यह टूटती है तो व्यक्ति प्रभावित होता है। 1950 में कास्मिक कैमिस्ट्री नाम की एक नई शाखा पैदा हुई । उसमें इस बात पर बल दिया गया कि पूरा ब्राहाण्ड एक शरीर है । यदि एक कण भी प्रभावित होगा तो पूरा ब्रहाण्ड तंरगित हो जाएगा। एक अन्य प्रयोग से यह सिद्व किया गया कि सूर्य पर आणविक विस्फोट होते है तो मनुष्य का खून भी पतला हो जाता है। आप संभवतः नही जानते हो कि व्यक्ति का खून सदैव एक सा रहता है। परन्तु स्त्रियो का खून उनके मासिक धर्म के दिनों में पतला हो जाता है।

ज्योतिष को लोग अंधविश्वास इसलिए कहते है कि हम उसके पीछे के वैज्ञानिक कारणों का स्पष्ट नही कर पाते । हम काज और एफेक्ट तथा कार्य और कारण के बीच सम्बन्ध तलाश नही कर पाते । परन्तु वास्तव में ऐसा नही है समयाभाव में, धन लोलुपता और अज्ञानतावश हम आगे नही बढ़ पा रहे है । दरअसल विज्ञान किसी अतिविकसित सभ्यता द्वारा दिया हुआ अविकसित ज्ञान है जिसे हम आगे नही बढ़ा पाए । हमारा भविष्य हमारे अतीत से अलग नही हो सकता, उससे जुड़ा हुआ होगा । हम कल जो भी होगे वह आज का ही जोड़ होगा । आज तक हम जो है वह बीतों हुए कलों का जोड़ हैं। भविष्य सदा अतीत से निकलेगा। हमारा आज कल से ही निकलेगा और आने वाला कल आज से इसलिए जो कल होने वाला है वह आज भी कही सूक्ष्म रूप से छुपा है उसे खोजना ही विज्ञान है।

एक छोटे से बीज में उसके पेड़ बन कर फल देने और नष्ट हो जाने के पूरा प्रोग्राम लिखा है। वह अंकुरित होगा । पौंधा बनेगा बड़ा होगा फिर पेड़ बन जाएगा आदि। इसी प्रकार गर्भ से ही बच्चे का पूरा प्रोग्राम निश्चित हो जाता है । यह बात अलग हैं कि पुरूषार्थ

से वह इस प्रोग्राम में थोड़ा बहुत परिवर्तन कर लें ।

प्रत्येक ग्रह-नक्षत्र अपने स्वभाव और गुण अनुसार व्यक्ति को प्रभावित करता है, यह अकाट्य सत्य है। विज्ञान भी इसको मानता है। वह कहता है कि यह सत्य है कि ग्रह-नक्षत्र व्यक्ति, पशु-पक्षी, जल, वनस्पति जलवायु आदि को प्रभावित अवश्य करते है। परन्तु यह अभी स्पष्ट नही कहा जा सकता है कि कोई व्यक्ति विशेष इनके प्रभाव से प्रभावित होगा ही । इस पर निंरतर शोध कार्य चल रहे हे और एक दिन विज्ञान को झुकना ही होगा इस सत्य की ओर।

-सम्पर्क

फोन नं : 09760111555

गजल

हादसों से तुम अगर घबराओगे
एक दिन खुद हादसा बन जाओगे।

जानते हो पत्थरों का शहर है,
किस गली से आइने ले जाओगे।

देख लेना तुम अगर मुन्सिफ बने,
सच यही सच नही कह पाओगे।

बांटते फिरते हो अपनापन मगर,
अपनी तन्हाई कहां ले जाओगे।

आदमी से प्यार करना सीख लो,
एक दिन वरना बहुत पछताओगे।

अपनी मंजिल खुद तलाशा कीजिए,
काफिले की भीड़ में खो जाओगे।

-किरण स्वरूप

पेट के रोग व आयुर्वेदिक नुस्खे

पेट-दर्द व गैस सम्बन्धी रोग

- अजवायन 4 ग्राम, नमक 2 ग्राम दोनों को गर्म पानी के साथ लेने से पेट का दर्द ठीक हो जाता है।
- हींग को पानी में पीसकर नाभि के चारों तरफ लेप करने से पेट का अफारा दूर हो जाता है।
- अजवायन एक तोला, सौंठ छ माशे, काला नमक तीन माशे तीनों को बारीक पीसकर तीन-तीन माशे गुनगुने पानी से दें।
- कागजी नींबू का रस 3 ग्राम, चूने का निथरा जल 30 ग्राम, देशी आजवायन चूर्ण दो ग्राम, इन सबको अच्छी तरह मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करना चाहिए।
- पीपल का चूर्ण, काला नमक, सेंधा नमक और काली मिर्च आधा आधा ग्राम पीस-छानकर 250 ग्राम दही में मिलाकर छाछ बना लें। पेट के विकारों के लिए अच्छी दवा है।
- सौंठ, अजवायन दो-दो तोला, नींबू के रस में भिगोकर रखें। जब पेट में दर्द या अफारा हो तो दो-दो माशे हल्के गुनगुने पानी से दें।
- नींबू मिला ताजा गुनगुना पानी वायु विकार में बहुत लाभप्रद है। पेट की सिकाई भी उपयोगी रहती है।
- सिरका, सोंठ, काला नमक, भुना सुहागा और हींग का फूला मिलाकर देने से पेट दर्द बंद होता है।

पेट के कीड़े

- जायफल एक माशे, शहद के साथ चाटें।
- दो टमाटरों पर नमक, काली मिर्च लगाकर सुबह 15 दिन तक खाएं। पेट के कीड़े बाहर निकल आएंगे। 3 साल से कम उम्र के बच्चों को न दें।
- कद्दू उबालकर, बिना मसालों का ही, बिना नमक के, भरपेट खा लें। दो दिन रात में ऐसा करने पर कीड़े बाहर निकल जाते हैं। छोटे बच्चों को न खिलाऐं।
- खट्टे अनार की जड़ चार तोले, पानी में तीन बार जोश दें। पानी आधा रह जाए तो छानकर तीन खुराक बनाकर सुबह-दोपहर-शाम को पीएं। रात में 4 तोला अण्डी का तेल भी पी लें।

कब्ज

कब्ज का अर्थ है दिनभर में एक बार भी शौच न जाना या खुलकर शौच न होना। कब्ज एक ऐसा रोग है जिसके कारण अनेक अन्य बीमारियां शरीर को खोखला बना देती है।

उपचार

- जुलाफा हरड़ का चूर्ण लेने से दस्त हो जाते हैं।
- साफ ईसबगोल दो चम्मच नित्य-प्रति रात में लेने से कब्ज नहीं होती। इसका प्रयोग पानी या गर्म दूधा से करें।
- रात में दूध में मुनक्का या छुआरे डालकर पीएं। रोजाना ऐसा करने से पेट साफ होता है, पाचन सुचारू रहता है और भूख लगती है।
- प्रातःकाल बिना कुछ खाएं दो दाने काजू, 5 दाने मुनक्का खाने से कब्ज दूर होती है।
- चार तोला गुलकंद रोज रात में दूध से खाकर सो जाएं। सुबह पेट साफ हो जाएगा।
- काला दाना 6 माशे, मिश्री 6 माशे मिलाकर गर्म पानी से दने पर कब्ज टूटती है।
- बेल का शर्बत बनाकर पीने से कब्ज दूर होती है।
- नित्यप्रति पपीते को सेवन कब्ज नाश करता है।
- एक समय दलिया व हरी तरकारी का सेवन या भूसी युक्त आटे की रोटी खाने से कब्ज होती ही नहीं है।
- त्रिफला और हरड़ को पीस छानकर गुनगुने पानी से सुबह-शाम लेने से कब्ज दूर होती है।

संग्रहणी

संग्रहणी रोग में आमाशय एवं आंत की पाचन-क्रिया गड़बड़ा जाने के कारण फैट (वसा) का सही अवशोषण नहीं हो पाता। परिणामतः अन्न के साथ खाई गयी वसा ज्यों-की-त्यों मल के साथ निकल जाती है। इस कारण शरीर में अनेक विटामिनों की कमी हो जाती है और त्वचा सम्बंधी विकार भी बनने लगते हैं। रोगी को पीड़ा व कमजोरी भी महसूस होती है।

उपचार

- छोटी हरड़ दो तोला, अफीम का डोडा एक तोला, दोनों को अलग-अलग घी में भूनें और बारीक पीसकर, बराबर की खांड मिलाकर रखें। प्रतिदिन नौ-नौ माशे पानी से खाएं।
- सूखा पोदीना, इलायची, सौंठ, सोंफ, गुलाब के फूल, धनिया, सफेद जीरा, अनारदाना, आलू बुखारा, हरड़-इन्हें पीसकर, बराबर मिश्री मिलाकर रख लें। 3 माशे ठण्डे जल से लें।

- आम की पुरानी गुठली की मांग, जामुन की गुठली की मांग दोनों को बराबर वजन लेकर कूट-छानकर सफूफ बनाएं। तीन माशे यह सफूफ, सुबह-शाम, छाछ से खाने पर संग्रहणी ठीक होती है।
- रसौत छ तोले पानी में घोलकर छान लें और थोड़ी देर रखा रहने दें। जब मिट्टी नीचे बैठ जाए तो पानी को निथाकर पकाएं। जब पानी उड़ जाए और रसौत रह जाए तो इसे सुखाकर 1 रत्ती की गोली बना लें। चार-चार गोलियां दिन में चार बार छाछ से खिलाएं। दो-तीन दिन तक कोई ठोस पदार्थ न खिलाएं। बाद में मूंग की दाल की खिचड़ी, दही से खिलाएं। संग्रहणी के लिए अत्यंत उपयोगी है।

भूख की कमी

सोंठ, सोंफ और मिश्री बराबर मिलाकर ताजे पानी से लें।

- अजवायन पांच तोले नींबू के रस में भिगोकर सुखा लें और थोड़े से काले नमक के साथ पीस-छानकर रखें। तीन-तीन माशे सुबह-शाम खाएं। भूख बढ़ेगी।
- कलौंजी पांच तोला रात को सिरके में भिगोएं। फिर छाया में सुखाकर शफूफ बनाएं। पन्द्रह तोला शहद में मिलाकर छः छः माशे सवेरे-शाम चाटें। भूख खूब लगती है।
- अदरक, नींबू का रस 5-5 तोला, नमक लाहौरी। तोला मिलाकर 3 दिन तक धूप में रखें। एक-एक चम्मच भोजन के उपरांत पीएं। खूब भूख लगती है।
- सोंठ, पीपर, पीपरामूल, यव्य, चित्रक, तालीस पत्र, दालचीनी, जीरा, सोंठ, अम्लवेत, अनारदाना, पांचों नमक बराबर लेकर कूट-छान लें। भोजन के बाद 2 माशे लें।

पेचिश, अतिसार (डायरिया)

पेचिस के लिए-इसके बार-बार शौच जाना पड़ता है व खूब आंव आता है।

- तुलसी के पत्ते शक्कर के साथ खिलाने से पैचिस दूर हो जाती है।
- आधा पाव दही में दो पके केले छीलकर मिला दें और सुबह-शाम सेवन कराएं।
- ईसबगोल की भूसी तीन-तीन माशा ठंडे पानी से दिन में तीन बार लें।
- अधपके बेल के गूदे को पानी में उबालकर छान लें। शहद मिलाकर सुबह-शाम खिलाएं।
- आम की पुरानी गुठली की मींग और सौंफ भुनी हुई दोनों बराबर मात्रा में लें और कूट-छानकर मिश्रण बना लें। छः-छः माशे सुबह-शाम पानी के साथ खाएं।

प्रस्तुति : पेट के रोग पुस्तक से साभार

श्रद्धा और विश्वास

उन दिनों स्वामी विवेकानंद विदेश यात्रा पर थे। उनकी मुलाकात एक यूरोपीय संत से हुई। वह उनके आश्रम में गए। आश्रम में कई शिष्य अध्ययन करते थे। संत के साथ विवेकानंद की धर्म और संस्कृति से लेकर कई अन्य मुद्दों पर चर्चा हुई। चर्चा के दौरान संत ने कहा, 'विवेकानंद जी' आप जो कुछ कह रहे हैं वह तो ठीक है लेकिन आपके देश में आडंबर बहुत है। जब आप कह रहे है। कि भगवान कण-कण में रहते हैं तो फिर आपके यहां के लोग पत्थर की मूर्ति की पूजा क्यों करते हैं? यह कर्मकांड नहीं तो और क्या है? विवेकानंद कुछ देर सोचते रहे फिर अचानक उठे और उन्होंने संत के कमरे के बाहर रखी उनकी फोटो को उठा लिया। अब वे उसे फेंकने ही वाले थे कि बगल में खड़े उनके एक शिष्य ने विवेकानंद का हाथ पकड़ लिया और संत की फोटो छीन कर क्रोध में कहा, 'आप ने हमारे गुरू का अपमान किया है। क्या आपके देश में संतों का इसी प्रकार अपमान किया जाता है।?'

विवेकानंद ने मुस्करा कर कहा, 'नहीं, हमारे देश में वहां के संतों के साथ-साथ विदेश के संतों की भी उपासना की जाती है। लोग उनके चरण धोकर उस पानी को अमृत समझ कर पीते हैं। मैं तो आपके गुरू के प्रश्न का उत्तर दे रहा था।' फिर उन्होंने संत से कहा, 'देख लिया न अपने शिष्य के व्यवहार को। आप की उपस्थिति में भी आपके शिष्य आपकी फोटो में आपका अक्स देखते हैं। उनकी जितनी श्रद्धा आप में है, उतनी ही आप की फोटो का अपमान नहीं होने देना चाहते। उसी तरह भगवान कण-कण में विराजमान हैं, लेकिन जो लोग मूर्ति की पूजा करते हैं उन्हें भगवान उसी मूर्ति में दिखाई पड़ते हैं। यह श्रद्धा और विश्वास है कि हमारे यहां के लोग भगवान को कहीं भी खोज लेते हैं, पत्थर की मूर्ति में और पीपल के पेड़ में भी।' संत निरूत्तर हो गए।

-प्रस्तुति : ज्योति कानुगा (गरिमा)

नव वर्ष की हार्दिक शुभ-कामनाएं।

-मानव मंदिर गुरूकुल

समानता का पाठ

यह घटना उस समय की है जब फ्रांस में हेनरी चतुर्थ का शासन था। हेनरी चतुर्थ सभी नागरिकों को एक समान मानते थे और उनमें अमीरी-गरीबी, ऊंच-नीच आदि के आधार पर भेदभाव नहीं करते थे। मगर उनके दरबारी और अधिकरी इस बात को पसंद नहीं करते थे कि सम्राट सभी को समान मानते हुए उनको सम्मान दें। एक बार हेनरी चतुर्थ अपने अधिकारियों के साथ किसी कार्यक्रम में शामिल होने जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक भिक्षुक मिला। भिक्षुक ने बड़ी विनम्रता से अपना हैट उतारा और सिर झुकाकर सम्राट का अभिवादन किया। सम्राट ने भिक्षुक के अभिवादन का ठीक उसी तरह विनम्रता के साथ सिर झुकाकर उत्तर दिया। सम्राट का यह व्यवहार उनके एक अधिकारी को अच्छा नहीं लगा। वह तुरंत उनसे बोला, 'महामहिम, किसी साधारण भिक्षुक को उसके अभिवादन का इस प्रकार उत्तर देना आपको शोभा नहीं देता। यादि आप एक भिक्षुक को भी इस प्रकार उत्तर देंगे तो राजशाही की गरिमा को ठेस पहुंचेगी।' अधिकारी की बात सुनकर सम्राट हंस पड़े। फिर उन्होंने कहा, 'बंधु, सभ्यता और संस्कार यही बताते हैं कि हमें प्रत्येक व्यक्ति के साथ विनम्र रहना चाहिए और यदि सम्राट ही सबके साथ विनम्रता व शालीनता से पेश नहीं आएगा तो फिर प्रजा उसके साथ आदर से कैसे पेश आएगी? याद रखना, प्रजा भी अपने राजा का तभी आदर करती है जब राजा उसके साथ पूर्ण आदर व प्रेम दर्शाए। लोगों को यह लगना चाहिए कि सत्ता उनके साथ है। वह उनसे दूर नहीं है। राजशाही का अर्थ नागरिकों को आतंकित करना नहीं, बल्कि उनके भीतर आत्मविश्वास पैदा करना है। यह तभी हो सकता है जब राजा और उसके समस्त अधिकारियों का व्यवहार सामान्य लोगों से मधुर और सौहार्दपूर्ण हो। फिर हम सभी मानव पहले हैं और राजा या भिक्षुक बाद में। सबको एक समान समझकर ही राजा अपनी प्रजा के साथ न्याय कर सकता है।' हेनरी चतुर्थ का जवाब सुनकर अधिकारी लज्जित हो गया और उसने सम्राट से माफी मांगी।

-प्रस्तुति : राजेन्द्र मेहरा

नूतन वर्ष 2010 शुभ मंगलमय हो।

-रूपरेखा परिवार

सकारात्मक दृष्टिकोण

यह केवल एक विचार है जिसे प्रयोग किया जा सकता है। विचार की शाक्ति तुरन्त हमें हमारे लक्ष्य तक पहुंचाती है। जीवन की संम्पूर्ण आरोह अवरोह हमारी सोच पर निर्भर करता है हम अक्सर वह काम करते है जिसे हमारा मस्तिष्क नकारता है ऐसी स्थिति में लगातार हमारी शाक्ति क्षींण हो जाती है। और हम असफल हो जाते हैं हमारे भीतर आ जाती हैं घोर निराश डिप्रेशन और फिर हम हाकर खडे हो जाते हैं शून्य में उस समय यदि हम नकारात्मक सोच को मस्तिष्क पर हावी होने से रोक सके तो ही हम विजयी हो सकते हैं। कुछ क्षण स्वयं स्वाध्याय व अध्यात्म की सकारात्मक सोच की मजबूत कवच धारा से स्वयं को ओत-पोत्र करना होगा और असफलता को सफलता में परिवर्तित करने की शक्ति को खोज ही लक्ष्य होना चाहिए।

असफलता से नहीं डरें हम, क्यों हुए असफल यह ढूंढना होगा।
सफलता के द्वार पर खडे होकर, स्थिर मानस को खोजना होगा।
कारण क्या थे क्यों गिरे धरा पर, इस सोच से अब उभरना होगा।
कल का सूरज खड़ा प्रतीक्षा में, प्रकाश की किरणों को बिखेरना होगा।
कहां तक कब तक उच्च शिखर पर, चढ़कर हिमायय की चोटी को पकड़ना होगा।
है यहीं अभी, हमारे हाथों में कुंज, सफलता की द्वार के हाथों से द्वार का खोलना होगा।
क्या कारण रहे बिलम्ब के जीवन में, आंकलन करके आगे बढ़ना होगा।
हर मानस में जल सकती है ज्वाला जीव की हर क्षण विजयी बनना होगा।
जग में बिखरते महकते पुष्पों से ही हार हर मानस को पहनना होगा।
मेरे देश के डिमडिमाते दीये, हर दिन दीवाली से सजाना होगा।
में नहीं जानती पीड़ा व्यक्ति के कुढित मानस की, जीत को हर हाल में जीतना ही होगा।
बने रहेंगे हम कठपुतली समय के हाथों की कब तक उत्तर इस प्रश्न का जानना ही होगा।
झकझोर दे जो हमारी चेतना को प्रफुलित हृदय वही खोजना होगा।
शत-शत प्रणाम उस जाग्रति अंर्तमन शक्ति को, पुंजित प्रकाश को फैलाना होगा।
भीतर के अति सुन्दर मन को नवविवहित यौवन से सजना होगा।

-संगीता धवन

सत्यमेव जयते

○ कृष्णकुमार यादव

'सत्यमेव जयते' प्राचीन भारतीय साहित्य में मुंडकोपनिषद् से लिया गया यह सूत्र वाक्य आज भी मानव जगत की सीमा निर्धारित करता है। सत्य की विजय हो का विपरीत होगा 'असत्य की पराजय हो'। सत्य-असत्य, सभ्यता के आरम्भ से ही धर्म एवं दर्शन के केन्द्र-बिंदु बने हुये हैं। रामायण में भगवान राम की रावण पर विजय को असत्य पर सत्य की विजय बताया गया और प्रतीक स्वरूप हम आज भी इसे दशहरा पर्व के रूप में मनाते हैं तथा रावण का पुतला जलाकर सत्य की विजय का शंखनाद करते हैं। महाभारत में भी एक कृष्ण के नेतृत्य और पांच पाण्डवों की सौ कौरवों और अट्ठारह अक्षौहिणी सेना पर विजय को सत्य की असत्य पर विजय बताया गया। कालांतर में वेद और पुराण के विपक्षी बुद्ध व जैन ने भी सत्य को पंचशील व पंचमहाव्रत का प्रमुख अंग माना।

'सत्य' एक बेहद सात्विक पर जटिल शब्द है। ढाई अक्षरों से निर्मित यह शब्द उतना ही सरल है जितना कि 'प्यार' शब्द, पर इस मार्ग पर चलना उतना ही कठिन है जितना कि सच्चे प्यार के मार्ग पर चलना। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जिन्हें सत्य का सबसे बड़ा व्यवहारवादी उपासक माना जाता है ने सत्य को ईश्वर का पर्यायवाची कहा। उनके शब्दों में- ''सत्य ही ईश्वर है एवं ईश्वर ही सत्य है।'' यह वाक्य ज्ञान, कर्म एवं भक्ति योग की त्रिवेणी है। सत्य की अनुभूति अगर ज्ञान योग है तो इसे वास्तविक जीवन में उतारना कर्मयोग एवं अंततः सत्य रूपी सागर में डूबकर इसका रसास्वादन लेना ही भक्ति योग है। शायद यही कारण है कि लगभग सभी धर्म सत्य को केन्द्र बिन्दु बनाकर ही उपने नैतिक और सामाजिक नियमों को पेश करते हैं।

सत्य का विपरीत असत्य है। सत्य अगर धर्म है तो असत्य अधर्म का प्रतीक है। गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं- ''जब-जब इस धरा पर अधर्म का अभ्युदय होता है तब-तब मैं इस धरा पर जन्म लेता हूँ'' भारत सरकार के राजकीय चिन्ह अशोक-चक्र के नीचे लिखा 'सत्यमेव जयते' शासन एवं प्रशासन की शुचिता का प्रतीक है। यह हर भरतीय को अहसास दिलाता है कि सत्य हमारे लिये एक तथ्य नहीं वरन् हमारी संस्कृति का सार है। साहित्य फिल्म एवं लोक विधाओं में भी अंततः सत्य की विजय का उद्घोष होता है।

सत्य के विलोम असत्य का सबसे व्यापक रूप आज भ्रष्टाचार है। ऐसा नहीं है कि समाज में पहले भ्रष्टाचार नहीं था। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में 27 प्रकार के भ्रष्टाचारों का उल्लेख किया है कि- ''जिस प्रकार जिह्वा पर रखे गये शहद का स्वाद न लेना मनुष्य हेतु

असम्भव है, उसी प्रकार सरकारी कर्मचारी हेतु राजकोष के एक अंश का भक्षण न करना असम्भव है।'' भ्रष्टाचार एक ऐसा विष बेल है जो समाज में नित्य फैल रहा है। इसे खत्म करने हेतु कड़े से कड़े दण्ड अपनाये गये, पर इसका विष और भी गहरा होता गया। यही कारण है कि एक दौर में भ्रष्टाचार को विश्वव्यापी समस्या कहकर इसका सामान्यीकरण करने की कोशिश की गयी तो देखते ही देखते भ्रष्टाचार को शिष्टाचार का पर्याय माना जाने लगा। निश्चिततः जब आप किसी व्यक्ति से काम निकलवाने हेतु उसे रिश्वत न देकर उसके जन्म दिन पर एक मंहगा और खूबसूरत उपहार प्रदान करते हैं तो आप अपनी बुरी नीयत को छुपाने का एक शिष्ट तरीका अपना रहे होते हैं।

वस्तुतः भ्रष्टाचार स्वयं व्यवस्था के अन्दर से ही जन्म लेता है। नियमों की जटिलता, न्याय में देरी, जागरूकता का अभाव, शार्टकट तरीकों से लक्ष्य पाने की होड़ और मानव का स्वार्थी स्वभाव ही इसका मूल कारण है। इन सबसे निपटने हेतु स्वतन्त्र न्यायपालिका, स्वतन्त्र प्रेस, लोकायुक्त व लोकपाल संस्था, सतर्कता आयोग, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो जैसी संस्थायें गठित की गयी। वर्तमान में उदारीकरण व्यवस्था के द्वारा लाइसेंस- परमिट राज की समाप्ति, सूचना-तकनीक के बढ़ते दायरे के साथ हर किसी पर मीडिया की नजर, सिटिजन-चार्टर के माध्यम से विभिन्न विभागों द्वारा नागरिकों को जागरूक बनाना, ई-गर्वनेस के द्वारा प्रशासन में कागजी बोझ कम करके कम्प्यूटराइजेशन द्वारा पारदर्शिता लाना व तत्काल सेवा मुहैया कराना, सिविल सोसायटी द्वारा अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना, सूचना का अधिकार लागू करने व स्टिंग आपरेशन जैसे तत्वों के द्वारा भी भ्रष्टाचार पर काबू करने के प्रयास किये गये हैं।

भ्रष्टाचार उस दीमक की तरह है जो समाज को अन्दर ही अन्दर खोखला करता है। यही कारण है कि इसे समाप्त करने हेतु हमें उस मर्म पर चोट करनी होगी, जहां से भ्रष्टाचार रूपी गेंद उछलती है, न कि उस जगह जहां पर वह गिरती है। भ्रष्टाचार पर अनेकों सेमिनार हुये, बड़े-बड़े पन्ने इसे खत्म करने के दावे से रंगे गये और तमाम जबानी जमा खर्च हुयी पर हम इस तथ्य की अवहेलना कर रहे हैं कि भ्रष्टाचार अन्ततः एक नैतिक एवं वैयक्तिक समस्या है। जब तक हर व्यक्ति स्वयं को इस दोष से मुक्ति दिलाने का प्रयास नहीं करता तब तक भ्रष्टाचार उन्मूलन एक नारा मात्र ही रहेगा। भगवान राम अन्त तक रावण के दस सिरों को तीरों से बींधते रहे पर उस पर कोई फर्क नहीं पड़ा, अन्ततः विभीषण के इशारे पर उन्होंने रावण की नाभि पर तीर चलाया और उसे धराशयी करने में सफल रहे। ऐसा ही भ्रष्टाचार के साथ भी है।

भ्रष्टाचार एक सामाजिक समस्या भी है। इससे निजात पाने हेतु जरूरी है कि लोग वैयक्तिक व मानसिक रूप से भ्रष्टाचार से मुक्त हों। गांधी जी ने सत्याग्रह का प्रतिपादन करते हुये कहा था कि इसे पूर्ण रूप में अपनाने हेतु जरूरी है कि सर्वप्रथम मानव अपने दुराग्रहों से मुक्ति पाये एवं तत्पश्चात दूसरों हेतु एक आदर्श उपस्थित कर उन्हें सत्य की राह दिखाये। इस सम्बन्ध में गांधी जी का एक सूत्र वाक्य दृष्टव्य है-

पाप से घृणा करो, पापी से नहीं।
शायद पूर्ण निष्पाप, तुम भी नहीं।।

दर्शन की भाषा में कहें तो हर व्यक्ति ईश्वर का चित् होने के कारण सत् है। उसके दुराग्रह ही उसे बन्धनों में बांधते हैं। इन बन्धनों में मुक्ति के विभिन्न रास्ते बताये गये हैं, जिसको अपनाने के पश्चात व्यक्ति मोक्ष की अवस्था को प्राप्त करता है। मोक्ष प्राप्ति के पश्चात व्यक्ति इस संसार के पुनर्जन्म चक्र से मुक्त हो जाता है।

यह सत्य है कि भ्रष्टाचार की जड़ें समाज में काफी गहरी हैं, पर इतनी भी गहरी नहीं कि कोई चाहकर भी उन्हें नहीं हिला सके। यही कारण है कि भ्रष्टाचार पर पड़ी हर चोट उसे झकझोर कर रख देती है। सत्य भले ही कम चोट बैठने की नहीं, वरन् इसे समाप्त करने हेतु प्रयास करने की है-

कौन कहता है कि आसमां में सुराख नहीं हो सकता।
एक पत्थर को तबियत से उछालो तो यारों।।

मानव मन्दिर मिशन ट्रष्ट की विशेष उपलब्धि

सेवा-कार्यों से जुड़ी स्वयंसेवी संस्थाओं को भारत सरकार का आयकर विभाग साधारणतया 80/G के अंतर्गत अनुदान का पचास प्रतिशत कर-मुक्ति का सर्टिफिकेट देता है। जिन संस्थानों को सेवा-कार्यों में विशिष्ट योग-दान रहता है, आयकर-विभाग उन्हें मिलने वाले अनुदान को 35/AC के अन्तर्गत शत-प्रतिशत कर-मुक्ति का प्रमाण पत्र देता है। हमें आपको सूचना देते हुए आनंद का अनुभव हो रहा है मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट को 35/AC का सर्टिफिकेट मिल गया है। यानि इसके अनुदान-दाता की दान-राशि आयकर से शत-प्रतिशत कर-मुक्त होगी। इस विशिष्ट उपलब्धि से मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट की सेवा-कार्यों की विश्वसनीयता और अधिक बढ़ गई है। जो दान-दाता इसका लाभ लेना चाहे, उनका स्वागत है।

विनीत : महासचिव - आर. के. जैन
मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट, नई दिल्ली

मासिक राशि भविष्यफल-जनवरी 2010

○ डॉ.एन.पी मित्तल,पलवल

मेष-मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार - व्यवसाय की दृष्टि से यह माह निर्वाह योग्य अर्थ प्राप्ति का रहेगा। हां कुछ जातकों को अचानक धन लाभ हो सकता है। अपनी क्षमता से बढकर कार्य करना स्वास्थ्य के लिये श्रेयस्कर नहीं होगा। नई साझेदारी सोच समझ कर करें। परिवार में सामन्जस्य बनाये रखने के लिये प्रयासरत रहें।

वृष-वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय कम देने वाला तथा खर्च अधिक कराने वाला है, व्यर्थ की भागदौड़ होगी। माह के आरम्भ में व्यर्थ के वार्तालाप से दूर रहें। कुछ अवरोधों के पश्चात सफलता मिलने के आसार हैं। परिवारिक सामन्जस्य से सन्तुष्टि मिलेगी। समस्याओं का समाधान निकल आयेगा।

मिथुन-मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से श्रम साध्य लाभ मिलेगा। भाग दौड़ काफी रहेगी जिससे मानसिक अशांति बनेगी। साझेदारी के कार्यों में भी उचित लाभ मिलने की सम्भावना नहीं है। घरेलू झंझटों में फसे रहेंगे। आप किसी का भला साचेंगे तो अकारथ ही जायेगा। समाज में मान-सम्मान बना रहे, यह हमेशा ध्यान रखें।

कर्क-कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह का पूर्वार्ध अवरोधों के पश्चात आमदनी कराने वाला है किन्तु खर्चा अधिक होगा। काफी सचेत रहने की आवश्यकता है। माह के उत्तरार्ध में समय पूर्वार्ध से कुछ अच्छा रहेगा। परिवार में सामन्जस्य बिठाना होगा। मित्रों से सहयोग मिलेगा। कुछ जातक विदेश यात्रा पर जा सकते हैं।

सिंह-सिंह राशि के जातकों के लिए व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह खर्चा अधिक तथा आमदनी कम कराने वाला है, अतः मानसिक परेशानी रहेगी। योजनांए तो बनेगी किन्तु क्रियान्वयन नहीं हो पायेगा। स्थानान्तरण की सम्भावना है। लेन-देन में विवाद से बचें। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। समाज में अधिक व्यस्त भी रहेंगे। क्रोध से बचें।

कन्या-कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध, उत्तरार्ध के मुकाबले अच्छा है। पर संधर्ष अधिक है। पूवार्ध में कोई शुभ समाचार की प्राप्ति सम्भव है। शत्रु सिर उठाएंगे किन्तु वे आपका कुछ नहीं बिगाड़ पायेंगे। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। माह के उत्तरार्ध में कोई आकस्मिक खर्चा आने से अर्थिक सन्तुलन गड़बड़ा सकता है तथा जिन्हें आप अपना मित्र समझते है वे आपके विरूद्ध कार्य कर सकते हैं।

तुला-तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह संघर्ष के पश्चात भी आंशिक लाभ वाला है। मिश्रित फल मिलंगे। शत्रु आपके बनते कार्यों में रूकावट डालने की कोशिश करेंगे किन्तु आप हालात पर काबू पा लेंगे। परिवार में सामन्जस्य बनाने में आप कामयाब रहेंगे। हो सकता है इस प्रक्रिया में आपको अपमान भी झेलना पड़े। क्रोध से बचें वाहन सावधानी से चलाएं। मानसिक तनाव एवं स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

वृश्चिक-वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिला कर शुभ फल दायक है। कार्य के प्रति दृढता का हास न होने दें। पुरूषार्थ के बल पर ही कुछ सफलता हाथ लगेगी। मित्र तथा परिवारी जन सहयोग देंगे शिक्षार्थी लाभान्वित होंगे। समाज में मान-साम्मान बना रहेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य की भी अनदेखी न करें।

धनु-धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर लाभ प्राप्त कराने वाला है। मित्रों का सहयोग मिलेगा। मुकदमे बाजी से दूर रहें। परिवार में कुछ परेशानी पैदा हो सकती है। समस्या को सुलझाने का प्रयास करें। शत्रुओं से सावधान रहें। वाहन सावधानी से चलायें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

मकर-मकर राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते अर्थ प्राप्ति का है। अपनी क्षमता से बढकर कार्य न करें। विरोधियों से सावधान रहना होगा। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। मित्र सहयोग प्रदान करेंगे। कुछ जातकों को भूमि भवन अथवा वाहन का लाभ प्राप्त हो सकता है। कोई भी निर्णय सोच विचार कर लें।

कुम्भ-कुम्भ राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर लाभ प्रद नहीं कहा जायेगा। कार्य सम्बन्धी छोटी-बड़ी यात्राएं होंगी। किन्तु उनसे लाभ नहीं मिल पायेगा। वाहन सावधानी से चलाये। आपसी टकराव तथा कोर्ट-कचहरी के चक्कर से बचें। परिवार में मतभेद सम्भव हैं। दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता बनाये रखना अनिवार्य होगा स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

मीन-मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। अनावश्यक रूप से किसी मद में पैसा न लगांए। नुकसान की सम्भावना है। अपने इर्द-गिर्द रहने वालों में अच्छे बुरे की पहचान करें। किसी नये कार्य की योजना बन सकती है। घर परिवार में कोई धार्मिक अनुष्ठान सम्भव है। समाज में मान सम्मान बना रहेगा तथा स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा।

-इति शुभम्

जैन आश्रम में आचार्य शिव मुनि का शुभागमन

मानव मन्दिर मिशन द्वारा संचालित जैन आश्रम नई दिल्ली में श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रमण संघ के यशस्वी आचार्य शिव मुनि के शुभागमन से दक्षिण तथ पूर्वी दिल्ली केमाज में विशेषतः खुशी की लहर दौड़ गई। पूज्य आचार्य श्री शिव मुनि तथा पूज्य आचार्य श्री रूपचन्द्र जी तथा पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुला श्री जी का संसंघ मधुर मिलन पूरे समाज के मानस में हजार प्रवचनों से अधिक से अधिक असरदार मधुर एकता का प्रभाव छोड़ गया । उल्लेखनीय है पूज्य आचार्य शिव मुनि तथ पूज्य आचार्य रूपचन्द जी के बीच सन 1984 के जयपुर चार्तुमास में बने मधुर आत्मीय सम्बन्ध इस मिलन से प्रगाढ़तर हो गए।

आचार्य शिव मुनि जैन परम्परा के वर्तमान बहुश्रुत आचार्यो में अपनी अलग पहचान रखते है। अंग्रेजी साहित्य तथा दर्शन- शास्त्र में डबल एम.ए. आचार्य शिव मुनि जी पी. एच.डी.तथा डी.लिट. भी है। विशेष यह भी पिछले पच्चीस वर्षो से एकान्तर तप की साधना कर रहे है। ध्यान योग आपका सर्वाधिक प्रिय विषय है। जैन आश्रम में अपना प्रवास रखने के निर्णय से आपकी वैचारिक दृढ़ता का परिचय भी मिलता है।

इस प्रवास में पूज्य आचार्य शिव मुनि तथा पूज्य आचार्य रूपचन्द्र जी के बीच हुई गोष्ठियों में विविध ध्यान पद्धतियाँ, साहित्य-सृजन, विदेश में धर्म प्रसार आदि विषयों के साथ साथ संघीय परम्पराओं तथा जैन मुनियों की समाचारी और वर्तमान चुनौतियां आदि पर खुलकर चर्चा हुई। आपने जैन आश्रम में चलने वाले विविध सेवा कार्यो बेसहारा बच्चों का गुरूकुल, नेचरोपैथी आयुर्वेद सेवा धाम हॉस्पिटल आदि प्रवृत्तियों में पूरी दिलचस्पी दिखाई। मानव मन्दिर गुरूकुल के छात्रों के सर्वागीण विकास पर अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हुए आपने कहा कि शिक्षा और संस्कार निर्माण की दिशा में यह बहुत ही महत्वपूर्ण समाज सेवा है। आश्रम के शांत एकान्त पवित्र वातावरण का गहरा प्रभाव मानस पर लिए आपने बिदाई ली।

मुरली की तरह थे मुरलीधर जी

हिसार निवासी श्री मुरलीधर जी गोयल (बड़ोपलिया) का पिछले दिनों स्वर्गवास हो गया आपकी स्मृति सभा में पूज्य गुरूदेव ने कहा कि सन् 1985 के हिसार प्रवास में बड़ोपालिया परिवार अत्यंत श्रद्वा प्रेम से हमारे साथ जुड़ा । तब से अब तक चाहे हम कही यात्रा / विहार में रहे, चाहे उन्हें हिसार से गुडगांव आना पडा किन्तु लाला जी का मन का तार

सदा जुड़ा रहा। भगवान कृष्ण की मुरली की तरह उनके मुख पर सदा परमात्मा का नाम रहता था। लाभ-हानि में, सुख-दुःख में, आराम-बीमारी में, जीवन के हर उतार-चढाव को वे प्रभु-प्रसाद मानकर ग्रहण करते थे। उनका अंतिम श्वास आंखों के द्वार से निकला, यह उनकी ऊंची गति का लक्षण है। पिछले कुछ समय से वे काफी अस्वस्थ चल रहे थे उनके पुत्रों वेद तथा भारत भूषण तथा पूरे परिवार ने तन-मन-धन से सेवा करके समाज के समक्ष प्रशंसनीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस प्रसंग पर पप्पू की मम्मी तथा आपसे यही कहना है मोह-ममता से मुक्त रहते हुए उनकी आत्मा की शांति और सद्गति की मंगल कामना करें। आप उनके यश को और आगे ले जाएं, यही आशीर्वाद। पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी ने लाला जी के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए पूरे परिवार को सांत्वना प्रदान की।

सरलमना साध्वीश्री मंजुश्री जी हिसार में

सरलमना साध्वीश्री मंजुश्री जी अपनी सहयोगी साध्वियों के साथ मानव मंदिर, हिसार में बिराजमान हैं। आपके हिसार-आगमन से समाज में जागृति की लहर आ गई है। वृद्धावस्था के बाबजूद आपकी कर्मपरायणता तथा हिम्मत अनुकरणीय है।

पूज्यवर की दक्षिण-भारत की तीर्थ-यात्रा

हर वर्ष की तरह इस बार पूज्य गुरूदेव 5 जनवरी से 15 जनवरी की दक्षिण भारत की तीर्थ-यात्रा पर रहेंगे। इस ससंघ तीर्थ-यात्रा में साधु-साध्वियों के साथ गुरूकुल के बच्चे तथा स्टाफ के सदस्य रहेंगे। इस यात्रा में भगवान बाहुबलि, कन्याकुमारी, रामेश्वरम्, तिरूपति बालाजी आदि तीर्थों का समावेश रहेगा। 17-18 जनवरी तक पूज्यवर दिल्ली वापस पधार जायेंगे। फरवरी-मार्च-अप्रैल में हरियाणा-पंजाब में यात्रा संभावित है।

नव वर्ष 2010 आपके लिए
निरोगमय, सुखमय
और मंगलमय हो

-सेवाधाम चिकित्सालय